भारत का संदेश

विश्व बंधुत्व

हिंदी विवेक

WE WORK FOR A BETTER WORLD

Issue : 23 - 29 August 2026

पितांबरी
हेल्थकेअर डिवीजन
गोमूत्र प्लस कॅप्सूल्स
गोमाता का स्वास्थ्यवर्धक वरदान !
आयुर्वेद में पहली बार
भारतीय गाय का
गोमूत्र प्लस पाउडर कॅप्सूल्स
त्रिफला युक्त
१०×१० कॅप्सूल्स । जी.एम.पी. प्रमाणित
Gomutra Plus Powder Capsules
गोमूत्र प्लस के लाभ
• कब्ज, हृदयरोग, मधुमेह जैसी बीमारियों में लाभदायक
• शरीर डिटॉक्स करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, वजन को नियंत्रित रखता है
• कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में फायदेमंद
• अनचाही गंध और स्वाद नही
गोमूत्र + त्रिफला (आंवला + बहेड़ा + हरीतकी) = गोमूत्र प्लस कॅप्सूल
भारतीय गोमूत्र को अमेरिका में भी मिला पेटंट।
फ्री सॅम्पल
FREE SAMPLE
कोड स्कॅन करें ४ कॅप्सूल्स का फ्री सैम्पल पाए
डॉ. रविंद्र प्रभुदेसाई जी के स्वानुभव पर आधारित इंटरव्यू के लिए कोड स्कॅन करें
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Contact: 9028181859 / 9403130410, CRM: 022-6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | Shop Online: www.pitambari.com/shop | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

◆ पारस्परिक रक्षा का स्नेह बंधन	उषा शर्मा 'प्रिया'	04
◆ 'विश्व बंधुत्व' भारत की छवि	रंजीत कुमार	06
◆ सामाजिक समरसता राष्ट्र-रक्षा का संकल्प	डॉ. लोकेंद्र सिंह	08
◆ शताब्दी वर्ष में संघ का वैश्विक संवाद	सचिन तिवारी	11
◆ श्रद्धालु और मंदिर प्रशासन भी जिम्मेदार	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	13
◆ अंकुर फुटने का महीना	सोनम लववंशी	15
◆ स्वर्णिम भविष्य की आशा	डॉ. तारकेश्वर नाथ मिश्र	18
◆ शिखर की ओर बढ़ते कदम	प्रवीण सिन्हा	20
◆ खेलों से एकता का संदेश	राजीव रोहित	22
◆ अंतरिक्ष विज्ञान को सशक्त बनाते लघु उद्योग	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	25
◆ संघव्रती प्रचारक बाबूराव देसाई	विजय कुमार	27
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	–	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

पारस्परिक रक्षा का स्नेह बंधन

> राखी केवल एक डोर नहीं है बल्कि यह स्नेह, प्रेम, सम्मान व विश्वास को भी मजबूती से बांधती है।

उषा शर्मा 'प्रिया'

रक्षाबंधन केवल भाई की कलाई पर राखी बांधने और भाई द्वारा बहन की रक्षा का वचन देने का पर्व नहीं है। यह विश्वास, स्नेह, सम्मान, जिम्मेदारी और पारस्परिक संरक्षण का पर्व है। 'रक्षा' का अर्थ केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं बल्कि एक-दूसरे के सम्मान, आत्मविश्वास, सुख और अधिकारों की रक्षा करना भी है।

इसी प्रकार रक्षाबंधन में 'रक्षा' शब्द का अर्थ केवल बाहरी या शारीरिक सुरक्षा नहीं है। किसी अपने की भावनाओं की रक्षा करना, उसके आत्मसम्मान को बनाए रखना, संकट में उसका साथ देना, उसके अधिकारों का सम्मान करना और उसे अकेला अनुभव न होने देना भी रक्षा ही है। इसलिए राखी का धागा हमें यह संदेश देता है कि रिश्ते अधिकार से नहीं बल्कि दायित्व और विश्वास से मजबूत होते हैं।

परम्परागत रूप से भाई बहन की रक्षा का वचन देता है, पर यह मानना उचित नहीं कि बहन का दायित्व केवल भाई के प्रेम को स्वीकार करने तक सीमित है। बहन भी भाई की भावनाओं, सम्मान, सुख और जीवन की कठिनाइयों में उसके साथ खड़ी रहती है। जब भाई परेशान होता है तो बहन उसका मनोबल बनती है और जब बहन किसी कठिनाई में होती है तो भाई उसका सहारा बनता है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के रक्षक होते हैं। आज के समय में रक्षाबंधन की सबसे सुंदर व्याख्या यही हो सकती है- मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा के साथ-साथ मैं भी तुम्हारे साथ रहूंगी।

परम्परागत रूप से भाई बहन की रक्षा का संकल्प लेता है, परंतु आज इस भावना को अधिक व्यापक रूप में देखने की आवश्यकता है। बहन भी भाई के सुख-दुःख में साथ देने, उसके सम्मान और हित की रक्षा करने का संकल्प ले सकती है। वास्तव में सच्चा रिश्ता

वही है जिसमें दोनों एक-दूसरे के लिए खड़े हों।

रिश्तों की मर्यादा और बदलता समय

आज की तेज जीवन शैली, एकल परिवार और बढ़ती व्यस्तता के कारण पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों में पहले जैसी आत्मीयता कई जगह दिखाई नहीं देती। रिश्ते कभी-कभी केवल औपचारिकता बनते जा रहे हैं। ऐसे समय में रक्षाबंधन हमें याद दिलाता है कि रिश्तों की मजबूती उपहारों से नहीं, भावनाओं से होती है।

आज समाज में रिश्तों की गर्माहट कहीं-कहीं कम होती दिखाई देती है। व्यस्त जीवन, बढ़ती भौतिक आकांक्षाएं, आत्मकेंद्रित सोच और डिजिटल जीवनशैली ने लोगों को एक-दूसरे के निकट होते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर कर दिया है। कई बार रिश्तों में प्रेम की जगह अपेक्षाएं, कर्तव्य की जगह स्वार्थ और संवाद की जगह मौन दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में रक्षाबंधन जैसे पर्व हमें अपनी जड़ों और सम्बंधों की वास्तविक शक्ति का स्मरण कराते हैं।

रक्षाबंधन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी रही है कि इसके लिए केवल सगा भाई होना आवश्यक नहीं माना जाता था। भारतीय सामाजिक जीवन में पड़ोस, परिवार और समुदाय के सम्बंध भी अत्यंत आत्मीय होते थे। बहनें पड़ोस के उन बच्चों या युवाओं को भी राखी बांधती थीं जिन्हें वे भाई के समान मानती थीं। इस परम्परा में रक्त-सम्बंध से अधिक भावनात्मक सम्बंध का महत्व था। राखी का धागा यह स्वीकार करता था कि भाई-बहन का रिश्ता केवल जन्म से नहीं, विश्वास और अपनत्व से भी बनता है।

आज एकल परिवारों के बढ़ने से यह सामाजिक ताना-बाना कमजोर हुआ है। पहले बड़े परिवार, संयुक्त परिवार और पड़ोस की आत्मीयता बच्चों को अनेक भाई-बहनों जैसा वातावरण देती थी। अब कई परिवारों में एक ही बच्चा होता है। बच्चे के पास खेलने, झगड़ने, मनाने और प्रेम बांटने वाले भाई-बहन नहीं होते। ऐसे में पड़ोस के बच्चों के साथ भी भाई-बहन जैसा आत्मीय सम्बंध विकसित किया जा सकता है। इससे बच्चों में साझेदारी, सहयोग, संवेदना और सामाजिकता की भावना मजबूत होती है। हालांकि आधुनिक समय में बच्चों की सुरक्षा और अभिभावकीय सतर्कता भी अत्यंत आवश्यक है। इसलिए पड़ोस या परिचितों के साथ रिश्ते बनाते समय परिवारों को विश्वास, मर्यादा और उचित सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए। परम्परा का उद्देश्य केवल राखी बांधना नहीं बल्कि स्वस्थ और सम्मानपूर्ण सम्बंधों का निर्माण करना है।

रक्षाबंधन हमें यह भी सिखाता है कि रिश्ते केवल त्योहारों पर याद करने के लिए नहीं होते। राखी एक दिन बंधती है, परंतु उसका भाव पूरे वर्ष जीवित रहना चाहिए। यदि भाई अपनी बहन के सम्मान की रक्षा करे, बहन भाई के संघर्ष में उसका मनोबल बढ़ाएं, दोनों एक-दूसरे की सफलता में प्रसन्न हों और कठिन समय में साथ खड़े हों, तभी राखी का वास्तविक अर्थ सार्थक होगा।

मूल संदेश

रक्षाबंधन हमें यह संदेश देता है कि रिश्ते रक्त से बन सकते हैं, परंतु उन्हें जीवित रखने के लिए संवेदना, विश्वास और सम्मान आवश्यक हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि राखी केवल कलाई पर न बंधे बल्कि दिलों में भी बंधे- ऐसी गांठ जो स्वार्थ से नहीं, स्नेह और दायित्व से मजबूत हो।

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का ऐसा पर्व है, जिसमें एक छोटी-सी राखी के धागे में प्रेम, विश्वास, स्नेह, सम्मान, दायित्व और जीवनभर साथ निभाने की भावना बंधी होती है। सामान्यतः रक्षाबंधन को भाई-बहन के प्रेम का पर्व माना जाता है, परंतु इसका वास्तविक अर्थ इससे कहीं व्यापक है। एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ खड़े रहने, सम्मान की रक्षा करने और रिश्तों को संवेदनशीलता से निभाने का संकल्प है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम रक्षाबंधन को केवल रस्म न बनने दें। महंगे उपहारों और औपचारिक शुभकामनाओं से अधिक मूल्यवान है एक-दूसरे को समय देना, बात सुनना, मन की पीड़ा समझना और आवश्यकता पड़ने पर बिना किसी स्वार्थ के साथ खड़ा होना। रिश्तों के फूल तभी खिले रहेंगे जब उन्हें प्रेम, विश्वास और सम्मान का जल मिलता रहेगा।

अंततः रक्षाबंधन केवल भाई की कलाई पर बंधा धागा नहीं बल्कि दो हृदयों के बीच बंधा विश्वास है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन में ऐसे सम्बंध होने चाहिए जहां अधिकार से अधिक दायित्व, अपेक्षा से अधिक त्याग, दूरी से अधिक अपनापन और शब्दों से अधिक संवेदना हो। सगा भाई हो या अपनाया हुआ भाई, सम्बंध की वास्तविक पहचान रक्त नहीं, भावना है। यदि हम इस भावना को अपने जीवन में उतार सकें तो रक्षाबंधन केवल एक त्योहार नहीं रहेगा बल्कि रिश्तों को बचाने, संवारने और उनकी मर्यादा को जीवित रखने का सामाजिक संकल्प बन जाएगा।

वसुधैव कुटुम्बकम

भारत ने विश्व में सहायता करने वाले देश की छवि बनाई है। इस तरह 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'विश्व बंधु' की अवधारणा के जरिए 'सब का साथ-सबका विकास' की सोच के साथ भारत ने पूरे विश्व के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

'विश्व बंधुत्व' भारत की छवि

वसुधैव कुटुम्बकम यानी पूरी दुनिया के लोगों को अपने परिवार के सदस्यों की तरह मानने वाली सदियों पुरानी परम्परा का आज भी भारत निष्ठापूर्वक पालन कर रहा है। इस विश्व परिवार का कोई भी सदस्य दुनिया के किसी भी कोने में किसी संकट में क्यों न फंसा हो, भारत के प्रतिनिधि वहां सहायता के सामान लेकर पहुंचने में देरी नहीं करते। जिस तरह भाई अपनी बहन की रक्षा का प्रण लेता है, उसी तरह भारत की सरकार दुनिया में बसे अपने परिवारजनों की सहायता को हमेशा तत्पर रहती हैं। इसका ताजा उदाहरण अगस्त के दूसरे सप्ताह में ही देखने को मिला, जब भारत से लगभग 15 हजार किलोमीटर दूर स्थित लैटिन अमेरिकी देश कोलम्बिया की राजधानी बोगोटा में आए भीषण भूकम्प में हजारों लोगों की जानें गईं और लाखों बेघर हो गए। जो भोजन-दवा के बिना खुले आसमान के नीचे रात बिताने को मजबूर थे। ऐसे ही संकट ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए भारतीय वायुसेना का परिवहन विमान करीब 20 टन राहत सामग्री के साथ पहुंचा, तब स्थानीय लोग हैरान हो गए कि कैसे इतनी दूर से भारत के लोग उनकी सहायता को पहुंचे हैं, जबकि उनके पड़ोस में ही स्थित कई बड़े अमीर व संसाधनवान देश दूर से ही पीड़ितों की व्यथा देखते रहे।

चाहे भूकम्प जो, सुनामी, समुद्री तूफान या कोई महामारी का प्रकोप फैला हो अथवा कोई अन्य प्राकृतिक आपदा से लोगों का जीवन संकट में फंसा हो, भारत सरकार कुछ घंटे के भीतर ही सहायता की आवश्यक सामग्री पहुंचा कर अपना मानवधर्म निभाती है।

इसी दशक के पिछले चार-पांच वर्षों पहले पूरी पृथ्वी चीन से फैले कोविड वायरस के कारण त्राहि-त्राहि कर रही थी और स्वयं भारत भी इसकी चपेट में आ गया था, परंतु भारत सरकार ने न केवल अपनी करोड़ों की जनसंख्या को कोविड महामारी से बचाने का काम किया बल्कि अपने पड़ोस में मालदीव से लेकर दूरदराज के लातिन अमेरिकी देशों और महासागरों में बसे छोटे द्वीप देशों की संसाधन विहीन और निसहाय जनसंख्या को कोविड का टीका मुफ्त में पहुंचा कर एक बड़ी विश्व शक्ति होने का दायित्व निभाया। इस दौरान भारत ने जो ऐतिहासिक मानवीय भूमिका निभाई, उसे हमेशा के लिए दुनिया भर के लोग याद रखेंगे।

रंजीत कुमार

सन 2004 में जब दुनिया सुनामी के प्रकोप से कराहने लगी थी, तब भारत सरकार ने न केवल अपने समुद्र तटीय क्षेत्रों के लोगों को संकट से उबारा बल्कि जापान, इंडोनेशिया से लेकर हिंद प्रशांत के सागर तट पर बसे लाखों लोगों को सामान्य जीवन में वापस लौटने में असाधारण सहायता की थी, तब भारत सरकार ने अपनी नौसेना के युद्धपोतों से सैकड़ों टन राहत साम्रगी भेजी थी।

यहां तक कि भारत से वैमनस्य की भावना रखने वाले देश तुर्किए में फरवरी, 2023 में जब भीषण भूकम्प से लाखों लोग उध्वस्त हो गए, तब वहां भी भारत ने अपनी सेना के जरिए ऑपरेशन दोस्त चलाकर भूकम्प पीडितों की सहायता करने में कोई कोताही नहीं बरती।

गत 18 अगस्त को ही गाजा पट्टी के क्षेत्र में फिलिस्तीन में भारत की राजदूत श्रीप्रिया रंगनाथन वहां के विदेश मंत्री डॉ. शाहीन से मिलीं और मानवीय सहायता के संदर्भ में चर्चा की। फिलिस्तीन को वर्षों से भारत शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में आवश्यक सहायता उपलब्ध कराता रहा है।

भारत इसी तरह छोटे व पिछड़े देशों को विभिन्न तरह की सहायता देकर अपने को बड़े भाई की भूमिका में पेश करता रहा है। यदि यह कहा जाए कि आज अफ्रीका से लेकर लैटिन अमेरिका और महासागरों के बीच स्थित छोटे द्वीप देशों को आवश्यक सुरक्षा वातावरण प्रदान करने में भारत अग्रणी भूमिका निभाने वाले देश के तौर पर उभर चुका है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय विदेश मंत्रालय औपचारिक तौर पर इन देशों के साथ सहायता तालमेल बना कर उनके लोगों के बीच जनकल्याण के कार्यक्रम तो चलाता ही है, साथ ही वहां के युवाओं को अपने पांवों पर खड़ा होने में भी सहायता प्रदान करता है। इन देशों के युवाओं को आधुनिक तकनीकी शिक्षा और पेशेवर तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह के कार्यक्रम तो चलाता ही है, उन्हें भारत के शिक्षण संस्थानों में विशेष प्रशिक्षण दिलवाने के लिए आमंत्रित भी करता है। इस मद में भारतीय विदेश मंत्रालय सन 2000 से अब तक करीब 50 अरब डॉलर खर्च कर चुका है। भारत सरकार का यह ध्वजवाहक कार्यक्रम संक्षेप में आईटेक यानी भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के नाम से प्रचलित है। आईटेक के अंतर्गत करीब 400 पाठ्यक्रमों में अल्पविकसित व विकासशील देशों के 10 हजार से अधिक युवाओं को भारत में छात्रवृति देकर आमंत्रित किया जाता है। ये कोर्स सूचना, तकनीक, कृषि, मीडिया, इंजीनियरी, अंग्रेजी, मैनेजमेंट, पेट्रोलियम, दूरसंचार, कपड़ा, पर्यटन, जैसे कई भिन्न पेशेवर क्षेत्रों में होते है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय सौर गठजोड़ (आईएसए) बनाकर भारत ने विशेषकर द्विपीय और छोटे देशों की ऊर्जा समस्या से निपटने के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान किया है। इन देशों को अपने देश में विकसित सौर ऊर्जा तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले महंगे ऊर्जा स्रोतों का प्रभावी व सस्ता विकल्प प्रदान कर आत्मनिर्भर बनने में भारत सहायता कर रहा है।

2008 के बाद से भारत ने विशेषकर अफ्रीका के लिए 10 अरब डॉलर का प्रावधान वित्तीय अनुदान के तौर पर किया है। इससे अफ्रीका के देशों के आर्थिक विकास को गति मिली है। छोटे अल्पविकसित देशों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान में हाथ बंटाकर भारत ने इस तरह पूरी दुनिया में अपनी साख स्थापित की है। इसके साथ ही निर्धन देशों को उर्जा और खाद्य सुरक्षा में मजबूत आधार प्रदान करने में भी भारत की भूमिका को सराहा जाता है।

●●●

डॉ. लोकेंद्र सिंह

रक्षाबंधन केवल भाई–बहनों के बीच प्रेम, स्नेह व सौहादर्य का पर्व नहीं है बल्कि इस उत्सव पर संघ का अनुकरण करके हम हिंदू समाज में एकता स्थापित कर सकते हैं।

सामाजिक समरसता राष्ट्र-रक्षा का संकल्प

भारत में उत्सव की अनूठी परम्परा है। ये उत्सव हमारे समाज को एक सूत्र में पिरोने और जीवन मूल्यों को जगाए रखने का काम करते हैं। हमारे प्रत्येक उत्सव की रचना में समाज के लिए आवश्यक संदेश हैं। ऐसा ही एक उत्सव है- रक्षाबंधन, जो हमें सामाजिक समरसता का संदेश देता है। सामान्य तौर पर हम इसे भाई-बहन के पवित्र प्रेम के त्योहार के रूप में जानते हैं, परंतु इसका वास्तविक विचार इससे कहीं अधिक बड़ा और गहरा है। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने रक्षाबंधन को अपने 6 उत्सव में शामिल किया है। संघ ने इस पर्व को सम्पूर्ण समाज को एकजुट करने, आपस में प्रेम-भाव बढ़ाने और देश की रक्षा का संकल्प लेने वाले महापर्व के रूप में देखा और उसे उसी ढंग से मनाना शुरू किया। यह पर्व हमें सिखाता है कि हम अपने समाज, संस्कृति और मातृभूमि की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहें। संघ ने समाज को स्मरण कराया कि रक्षाबंधन केवल एक धागा बांधने की रस्म नहीं है। हमारे यहां सम्बंधों की नींव विश्वास पर टिकी होती है और यह धागा उसी विश्वास की डोर है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिस तरह एक धागा बिखरे हुए अनगिनत मोतियों को जोड़कर एक सुंदर माला बना देता है, ठीक वैसे ही यह रक्षासूत्र भी समाज के अलग-अलग लोगों को आपस में जोड़कर एक कर देता है। पुराने समय में यह पर्व सिर्फ भाई-बहन तक ही सीमित नहीं था। जब भी समाज या देश पर कोई संकट आता था तो लोग एक-दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर साथ खड़े रहने और सहायता करने का विश्वास दिलाते थे।

अपनी स्थापना के एक वर्ष के भीतर ही संघ ने 1926 में अपना पहला रक्षाबंधन उत्सव मनाया था। नागपुर के तुलसी बाग में आयोजित एक बैठक के स्वरूप में रक्षाबंधन का पहला उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर रक्षाबंधन के सामाजिक समरसता के व्यापक स्वरूप पर भी प्रबोधन किया गया। उसके बाद से प्रतिवर्ष संघ में रक्षाबंधन का उत्सव बहुत आत्मीय और व्यापक रूप से मनाया जाता है। इस दिन शाखाओं में स्वयंसेवक सबसे पहले अपने परम पवित्र भगवा ध्वज को रक्षासूत्र बांधते हैं। भगवा ध्वज हमारे देश के त्याग, शौर्य और उच्च सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक है। ध्वज को राखी बांधने का मतलब यह संकल्प लेना है कि हम मिलकर अपने समाज के अच्छे मूल्यों, परम्पराओं और धर्म की रक्षा करेंगे क्योंकि जब हम धर्म और समाज की रक्षा करेंगे, तभी वह हम सबकी रक्षा कर सकेगा। इस सम्बंध में श्री गुरुजी का मानना था कि जब कोई किसी को राखी बांधता है तो उसका यह कर्तव्य बन जाता है कि वह अपनी जान देकर भी राखी बांधने वाले की रक्षा करे। स्वयंसेवक जब ध्वज को राखी बांधते हैं तो वे यह तय करते हैं कि वे अपने देश के गौरव को दुनिया में हमेशा ऊंचा रखेंगे। स्वयंसेवक अपने

पवित्र ध्वज को राखी बांधकर वह निश्चय करता है कि अपने इस राष्ट्रीय ध्वज को सारे संसार में ऊंचा लहराऊँगा, जिसका गौरव स्थायी रखने के लिए पूर्वकाल में असंख्य वीरों ने खून बहाया है।

बस्ती में जाकर रक्षाबंधन मनाते हैं स्वयंसेवक

भगवा ध्वज को रक्षासूत्र बांधने के बाद सभी स्वयंसेवक एक-दूसरे को स्नेह की डोर बांधते हैं। यहां किसी की जाति, भाषा, पैसे या ऊंच-नीच का कोई भेद नहीं होता। यह छोटा-सा धागा सभी को एक परिवार के रूप में बांध देता है। शाखा के कार्यक्रम के बाद स्वयंसेवक अपने आस-पास की उन बस्तियों में जाते हैं, जो वर्षों से उपेक्षित या अभाव में रही हैं। स्वयंसेवक वहां रहने वाले परिवारों के बीच बैठते हैं, उन्हें प्यार से रक्षासूत्र बांधते हैं और बंधवाते हैं। स्वयंसेवकों का यह प्रयास समाज में सबको बराबर मानने की सच्ची भावना को जमीन पर उतारता है। रक्षाबंधन उत्सव के इन अनुकरणीय प्रयासों से हिंदू समाज के अंदर ऐक्य एवं सामरस्य भाव-संचार का गुणात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगा है। यह भाव कैसे आता है, इस सम्बंध में संघ के प्रचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी कहते हैं कि रक्षाबंधन आपसी विश्वास का पर्व है। इस पर्व पर जो-जो सक्षम हैं, वे अन्य को विश्वास दिलाते हैं कि वे निर्भय रहें, किसी भी संकट में सक्षमता उनके साथ खड़े रहेंगे। संघ इस उत्सव और अपने करोड़ों स्वयंसेवकों के माध्यम से इसी विश्वास को समाज में पुनर्स्थापित करने का श्रेयस्कर कार्य कर रहा है।

आज के समय में रक्षाबंधन का महत्व

रक्षाबंधन उत्सव पर संघ का अनुकरण करके हम हिंदू समाज में एकता स्थापित कर सकते हैं। जिन जातीय या वर्ग भेद को उभारकर हिंदू विरोधी शक्तियां हिंदुओं को एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ाने का प्रयास कर रही हैं, उस षड्यंत्र को एक झटके में रक्षाबंधन उत्सव समाप्त कर सकता है। हिंदू समाज के जिन वर्गों को कमतर बताकर उन्हें अलग-थलग करने का प्रयास किया जाता है, तब उनके पास जाकर, उन्हें रक्षासूत्र बांधकर, उनका विश्वास जीता जा सकता है। हिंदुओं को बांटने के लिए उठ रहे शोर के बीच रक्षासूत्र बांधने के लिए आगे बढ़े हाथ का स्पर्श उन्हें अहसास कराएगा कि हम सब एक हैं, हम एक-दूसरे का हाथ थामकर किसी भी परिस्थिति का सामना कर लेंगे। उन्हें लगेगा कि हमें थामने वाले हमारे ही अपने हिंदू समाज के बंधु हमारे आस-पास खड़े हैं। संघ ने रक्षाबंधन के माध्यम से सीधा और सच्चा संदेश देने का प्रयास किया है कि समाज के आखिरी व्यक्ति तक सुरक्षा, सम्मान और अपनापन पहुंचे। जब हम सब मिलकर एक-दूसरे का हाथ थामेंगे और अपने देश एवं समाज की भलाई के लिए खड़े होंगे, तभी एक सुखी, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो सकेगा।

रक्षाबंधन का इतिहास और इसकी पुरानी परम्परा

प्राचीन समय में हमारे देश में रक्षाबंधन को शिक्षा और ज्ञानार्जन से जोड़कर देखा जाता था। उस जमाने में आज की तरह आने-जाने के साधन नहीं होते थे। गुरुकुल नगरों से दूर शांत जंगलों में बने होते थे। बारिश के दिनों में जब गुरुकुलों में पढ़ाई बंद हो जाती थी, तब गुरु और शिष्य मिलकर श्रावण पूर्णिमा से स्वाध्याय और ज्ञान बढ़ाने के लिए एक बड़ा अनुष्ठान शुरू करते थे, जो कई महीनों तक चलता था। इसलिए रक्षाबंधन को श्रावणी भी कहा जाता है। समय के साथ इस पर्व के मनाने के तौर-तरीकों में भी बदलाव आया। स्कंद पुराण में बताया गया है कि श्रावण पूर्णिमा की सुबह लोग पवित्र सरोवरों और नदियों में स्नान करके नया जनेऊ पहनते थे। इसके बाद ऋषि-मुनियों और पूर्वजों का तर्पण करके राजाओं, मित्रों और यजमानों के हाथों पर रक्षा का पवित्र धागा बांधते हुए उनकी भलाई की कामना करते थे।

●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

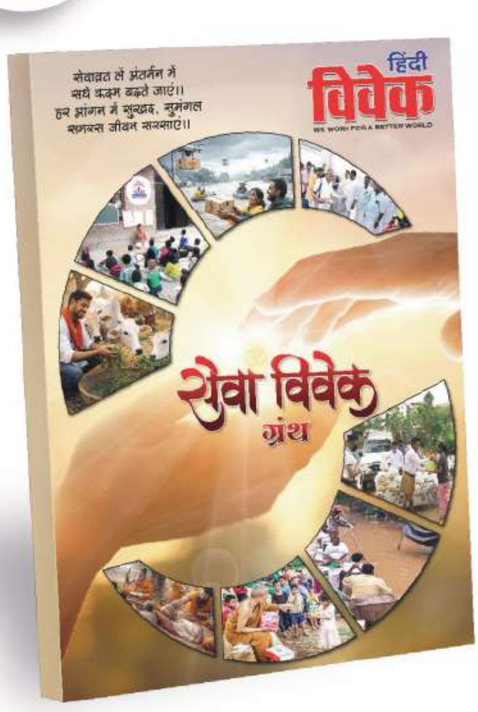

प्रकाशन पूर्व मूल्य
₹600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

यात्रा

सचिन तिवारी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी आगामी 25 अगस्त 2026 से अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन की यात्रा पर रहेंगे। इस यात्रा के विश्लेषण पर डालते हैं एक दृष्टि।

शताब्दी वर्ष में संघ का वैश्विक संवाद

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी आगामी 25 अगस्त 2026 से अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन की यात्रा पर रहेंगे। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आम्बेकर के अनुसार यह यात्रा इन देशों में सक्रिय स्थानीय संस्थाओं और भारतीय प्रवासी समुदाय से जुड़े संगठनों के निमंत्रण पर हो रही है। विशेष बात यह है कि यह यात्रा संघ के शताब्दी वर्ष में हो रही है।

इस यात्रा को केवल किसी संगठन के प्रमुख की विदेश यात्रा के रूप में देखना इसके व्यापक अर्थ को सीमित कर देना होगा। यह यात्रा भारत के सांस्कृतिक विचार, प्रवासी भारतीयों के साथ संवाद, भारतीय मूल्यों की वैश्विक प्रासंगिकता और विश्व के प्रति भारत के दृष्टिकोण को समझने तथा समझाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। संघ का शताब्दी वर्ष इस यात्रा को और अधिक अर्थपूर्ण बनाता है। पिछले 100 वर्षों में संघ ने भारत के सामाजिक जीवन में राष्ट्रभाव, सेवा, संगठन और सांस्कृतिक चेतना को केंद्र में रखकर कार्य किया है। ऐसे समय में जब भारतीय समुदाय विश्व के लगभग प्रत्येक बड़े देश में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है, उसके साथ वैचारिक और सांस्कृतिक संवाद स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

डॉ. भागवत जी की यात्रा का पहला महत्वपूर्ण पक्ष भारतीय प्रवासी समाज से सम्पर्क है। अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन में बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। ये समुदाय केवल आर्थिक रूप से प्रभावशाली नहीं हैं बल्कि शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, उद्योग, प्रशासन और सार्वजनिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विदेशों में बसे भारतीयों की नई पीढ़ी का भारत से सम्बंध केवल पारिवारिक स्मृतियों तक सीमित नहीं रह सकता। उसके सामने यह प्रश्न भी है कि आधुनिक वैश्विक नागरिक होने के साथ वह अपनी सभ्यतागत पहचान को किस प्रकार समझे। ऐसे में डॉ. मोहन भागवत जी का संवाद भारतीय संस्कृति को किसी संकीर्ण पहचान के रूप में नहीं बल्कि जीवन-मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व के व्यापक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

न्यूयॉर्क में 29 अगस्त को भारतीय-अमेरिकी समुदाय के एक कार्यक्रम में डॉ. भागवत के सम्बोधन की जानकारी सामने आई है। कार्यक्रम रक्षाबंधन के अवसर से भी जुड़ा है और उसमें एकता, सामाजिक सद्भाव तथा वैश्विक सामंजस्य जैसे विषयों को स्थान दिया गया है। यह तथ्य महत्वपूर्ण है क्योंकि रक्षाबंधन केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि भारतीय सामाजिक चेतना में सम्बंध, संरक्षण और पारस्परिक उत्तरदायित्व की भावना का भी प्रतीक है। इस यात्रा का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष भारतीयता की उस अवधारणा को सामने रखना हो सकता है, जिसे संघ लम्बे समय से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में प्रस्तुत करता रहा है। भारतीय दृष्टि में राष्ट्र केवल राजनीतिक सीमाओं से निर्मित इकाई नहीं है। भाषा, संस्कृति, इतिहास, परम्परा, स्मृति, सामाजिक सम्बंध और

साझा जीवन-मूल्य भी राष्ट्र की चेतना को निर्मित करते हैं। भारत से बाहर रहने वाले भारतीय मूल के लोगों के लिए यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि आधुनिकता और वैश्वीकरण के बीच अपनी सांस्कृतिक जड़ों को कैसे जीवित रखा जाए। भागवत का संवाद इसी प्रश्न को नई पीढ़ी के संदर्भ में सम्बोधित कर सकता है। यात्रा का तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष युवाओं से संवाद है। हाल के महीनों में डॉ. भागवत जी ने जेन जी औरजेन अल्फा को लेकर कहा है कि नई पीढ़ी तर्क, निष्ठा और उद्देश्यपूर्ण संवाद को महत्व देती है तथा देशभक्ति और सेवा की अपील उसके लिए प्रभावी हो सकती है। विदेशों में पली-बढ़ी भारतीय मूल की युवा पीढ़ी के सामने पहचान का प्रश्न और अधिक जटिल है। वह एक साथ भारतीय विरासत, स्थानीय समाज और वैश्विक नागरिकता के अनुभव से गुजरती है। इसलिए इस यात्रा में युवाओं के साथ संवाद केवल अतीत की स्मृतियों का संवाद नहीं होगा बल्कि भविष्य के भारत और विश्व की कल्पना पर भी केंद्रित हो सकता है। चौथा आयाम भारत की वैश्विक भूमिका का है। आज भारत केवल एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में नहीं बल्कि अपनी सभ्यतागत दृष्टि के साथ विश्व के सामने उपस्थित हो रहा है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, लोकतांत्रिक परम्परा, परिवार की अवधारणा, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे विचार भारत की वैश्विक पहचान का हिस्सा बन चुके हैं। डॉ. मोहन भागवत जी लम्बे समय से भारत की भूमिका को केवल शक्ति के आधार पर नहीं बल्कि समाज और संस्कृति की शक्ति के आधार पर देखने की बात करते रहे हैं।

यहां संघ की शताब्दी का संदर्भ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 1925 में स्थापित संगठन का 100 वर्ष पूरा करना केवल संगठनात्मक उपलब्धि नहीं बल्कि उसके लिए आत्ममंथन और भविष्य की दिशा निर्धारित करने का अवसर भी है। विदेशों में संवाद इस शताब्दी-विमर्श को भारत की सीमाओं से बाहर ले जाने का माध्यम बन सकता है। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार यात्रा का उद्देश्य भारतीय प्रवासी समुदाय तथा स्थानीय संगठनों से सम्पर्क को मजबूत करना है। इस यात्रा से एक और महत्वपूर्ण बात सामने आ सकती है, भारत और भारतीयता को समझने की वैश्विक जिज्ञासा। पश्चिमी देशों में भारत के बारे में अनेक प्रकार के विमर्श उपस्थित हैं। एक ओर भारत को तेजी से उभरती आर्थिक और तकनीकी शक्ति के रूप में देखा जाता है, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज, हिंदू संस्कृति, राष्ट्रवाद और संघ जैसे विषयों को लेकर अनेक धारणाएं और मतभेद भी हैं।

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

भगदड़

जब मंदिर प्रशासन की योजना, शासन की व्यवस्था और श्रद्धालुओं का अनुशासन- तीनों एक साथ काम करेंगे, तभी हम यह सुनिश्चित कर पाएंगे कि मंदिरों में उमड़ने वाली आस्था की भीड़ उत्सव बने, दुर्घटना नहीं।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

श्रद्धालु और मंदिर प्रशासन भी जिम्मेदार

भारत पर्वों और त्यौहारों के अतिरिक्त आस्था और भक्ति भावना का देश है, हर नगर-गांव के अपने देवता होने के साथ-साथ भारतीय तीर्थ यात्राओं के माध्यम से देवदर्शन की परम्परा का अनुपालन करने वाले नागरिक हैं। हमारे देश में मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थान नहीं हैं बल्कि वे करोड़ों लोगों की आस्था, संस्कृति और सामाजिक जीवन के मुख्य केंद्र हैं। विशेष पर्वों, मेलों, धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों, नववर्ष, अमावस्या, पूर्णिमा, नवरात्र, महाशिवरात्रि, जन्माष्टमी, श्रावण माह, पुरुषोत्तम माह अथवा किसी विशेष धार्मिक आयोजन के अवसर पर मंदिरों में श्रद्धालुओं की संख्या सामान्य दिनों की अपेक्षा कई गुना बढ़ जाती है। लाखों लोग दूर-दूर से दर्शन करने पहुंचते हैं। हर भारतीय वर्ष में लगभग 5 से अधिक तीर्थ यात्रा करता है और यही कारण भारत की आध्यात्मिक ऊर्जा प्रबल होने के साथ-साथ सरकारों की आय में बढ़ोतरी का एक कारण तीर्थ क्षेत्र से आने वाली आमदनी भी है, जिसे नए अर्थशास्त्र में 'टेम्पल इकॉनमी' भी कहा जाता है।

बीते कुछ वर्षों में हुए मंदिरों और धर्मस्थलों पर इसी तरह के हादसों ने सैंकड़ों लोगों की जान ले ली, जो निश्चित रूप से प्रशासकीय विफलता और जनता की लापरवाही ही मानी जाएगी। जैसे कि कुछ दिन पूर्व 17 अगस्त 2026 को बिहार के अशोक धाम मंदिर में एक बड़ा हादसा हो गया। सावन के सोमवार को भगवान शिव पर जल चढ़ाने के लिए उमड़ी भीड़ के दौरान बिजली का खम्बा गिरने की अफवाह के कारण भगदड़ मच गई, जिसमें 7 श्रद्धालुओं की मौत हो गई और कई घायल हो गए। उसी दिन मध्य प्रदेश के उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर परिसर में नागचंद्रेश्वर दर्शन के दौरान भी शॉर्ट सर्किट की अफवाह से भगदड़ की स्थिति बनी, जिसमें कई लोग घायल हुए।

2 जुलाई 2024 को उत्तर प्रदेश के हाथरस में एक स्वयंभू बाबा (भोले बाबा) के धार्मिक समागम में क्षमता से तीन गुना अधिक भीड़ जुटने और बाबा की चरण धूल लेने की

होड़ में भीषण भगदड़ मच गई, जिसमें 121 लोगों की मौत (मुख्य रूप से महिलाएं और बच्चे) हो गई। ये आंकड़े डराने के लिए नहीं बल्कि प्रशासकीय अव्यवस्थाओं और जनता की नासमझी के दस्तावेज हैं, जो यह दर्शाते हैं कि इस तरह की श्रद्धा के दौरान भी हमें सतर्क रहना आवश्यक है। मंदिरों में भगदड़ की घटनाएं केवल एक प्रशासनिक विफलता का प्रश्न नहीं हैं। इनके पीछे भीड़-प्रबंधन, मंदिर प्रशासन, पुलिस-व्यवस्था, स्थानीय प्रशासन, अवसंरचना, संचार व्यवस्था और स्वयं श्रद्धालुओं के व्यवहार से जुड़े अनेक कारण होते हैं। इसलिए इसका समाधान भी किसी एक पक्ष को दोषी ठहराने से नहीं बल्कि साझी जिम्मेदारी, वैज्ञानिक भीड़-प्रबंधन और अनुशासित धार्मिक आचरण से सम्भव है।

सामान्य बोलचाल में किसी भी बड़ी भीड़ में अफरा-तफरी को भगदड़ कह दिया जाता है, लेकिन भीड़ की दुर्घटनाओं को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि हर घटना एक जैसी नहीं होती। कई बार लोग किसी संकट की आशंका में अचानक एक दिशा में भागने लगते हैं। कभी कोई व्यक्ति गिर जाता है और उसके पीछे आने वाले लोगों को उसके ऊपर गिरने का पता नहीं चलता। कभी संकरे द्वार या गलियारे में बहुत अधिक लोग एक साथ प्रवेश करने का प्रयास करते हैं। कभी बाहर निकलने का मार्ग बंद या अत्यधिक संकरा होता है। कभी दर्शन के लिए आगे बढ़ने की होड़ में भीड़ का दबाव इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति अपने शरीर पर नियंत्रण खो देता है। विशेषज्ञों के अनुसार अत्यधिक घनी भीड़ में व्यक्ति की स्वतंत्र गति समाप्त हो सकती है। वह अपनी इच्छा से आगे या पीछे नहीं जा पाता और भीड़ का सामूहिक दबाव उसे उसी दिशा में धकेलता है, जिस दिशा में भीड़ का दबाव बन रहा हो। ऐसी स्थिति में छोटी-सी घटना भी बड़े हादसे में बदल सकती है। इसलिए भगदड़ को केवल यह कहकर समझना कि 'लोग घबरा गए और भागने लगे', अधूरा विश्लेषण है। कई बार समस्या भीड़ की अत्यधिक घनत्व, दबाव, संकरे रास्ते और निकासी की अपर्याप्त व्यवस्था से पैदा होती है।

मंदिरों में भगदड़ के प्रमुख कारणों में अपेक्षा से कहीं अधिक भीड़, दर्शन के लिए आगे निकलने की जल्दबाजी, संकरे प्रवेश और निकास द्वार, एक ही समय में बड़ी संख्या में लोगों का प्रवेश, अफवाह और अचानक भय, सीढ़ियां और ऊंचाई वाले मार्ग एवं सबसे महत्वपूर्ण है वीआईपी दर्शन की व्यवस्था। इन कारणों के अतिरिक्त भी श्रद्धालु भी उतने ही जिम्मेदार हैं, जितने व्यवस्थापक हैं।

●●●

सावन

सोनम लववंशी

सावन के आते ही जहां मौसम भी सुहावना हो जाता है, वहीं खेत भी मुस्कुराने लगते हैं। चहूं ओर हरियाली ही दिखाई देने लगती है और किसान हर्षित व उल्लासित हो उठते हैं क्योंकि सावन का महीना जो कृषि के लिए बेहद विशेष है।

अंकुर फुटने का महीना

सावन की पहली बारिश के साथ मिट्टी की सोंधी गंध उठती है और धरती जैसे लंबी प्रतीक्षा के बाद मुस्करा देती है। सूखे खेतों में पानी की चमक दिखाई देती है, मेड़ों पर घास उग आती है और कुछ ही दिनों में दूर तक फैले खेत हरियाली की चादर ओढ़ लेते हैं। पेड़ों की डालियों पर झूले पड़ते हैं, लोकगीतों में सावन उतरता है और गाँव की गलियों में उत्सव का रंग घुल जाता है। इस पूरे दृश्य के बीच किसान की आँखों की चमक सबसे अलग होती है। उसके लिए सावन केवल ऋतु नहीं, मेहनत के फल में बदलती उम्मीद का मौसम है, क्योंकि ये वो समय है जब आकाश और धरती के बीच एक अदृश्य संवाद शुरू होता है। बादल संदेश लेकर आते हैं, मिट्टी उसे स्वीकार करती है और किसान उस संवाद को अपनी मेहनत से फसल में बदलता है। दरअसल सावन की हर बूँद में सिर्फ पानी नहीं होता। उसमें किसान की उम्मीद होती है। हर अंकुर में आने वाले कल का भरोसा होता है। और हर लहलहाते खेत में उस मेहनतकश हाथ की कहानी होती है, जो आसमान की ओर देखकर धरती का भविष्य लिखता है।

किसान के लिए जीवनधारा है बारिश

भारत की कृषि का मानसून से रिश्ता सदियों पुराना है। मौसम विज्ञान विभाग के 1971-2020 के दीर्घकालिक आँकड़ों के अनुसार जून से सितंबर के दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान देश में औसतन 868.6 मिलीमीटर वर्षा होती है। यह देश की कुल वार्षिक औसत वर्षा 1160.1 मिलीमीटर का लगभग 75 प्रतिशत है। जुलाई में औसत वर्षा 280.4 मिलीमीटर और अगस्त में 254.9 मिलीमीटर रहती है। ये आँकड़े बताते हैं कि मानसून के महीनों में बरसने वाला पानी भारतीय कृषि के लिए कितना महत्वपूर्ण है। किसान के लिए बारिश का अर्थ खेत में पानी भरना नहीं है। इसका अर्थ है मिट्टी में नमी, बीज में अंकुरण, पौधों में वृद्धि और फसल में जीवन। धान, मक्का, बाजरा, दलहन, तिलहन और कपास जैसी अनेक खरीफ फसलें मानसून की नमी और उसके वितरण से गहराई से जुड़ी हैं।

सावन की राह क्यों तकता है किसान?

किसान की सावन से जुड़ी प्रतीक्षा वास्तव में पूरे कृषि-वर्ष की प्रतीक्षा है। बीज, खाद और श्रम पर खर्च करने के बाद

उसकी निगाह आसमान पर टिकती है। उसे भरोसा होता है कि समय पर हुई बारिश उसकी मेहनत को खेत की हरियाली में बदल देगी। धान के खेतों में रोपाई के दौरान पानी की जरूरत होती है। वर्षा आधारित खेती में मिट्टी की नमी ही फसल की पहली ताकत बनती है। बारिश अच्छी हुई तो खेत में काम बढ़ता है, मजदूरों को रोजगार मिलता है और गाँव की अर्थव्यवस्था में गतिविधियाँ तेज होती हैं। इसीलिए सावन की बारिश एक किसान के खेत से निकलकर पूरे ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती है।

बारिश का होना ही काफी नहीं

किसान को केवल बारिश नहीं चाहिए, उसे सही समय पर और सही मात्रा में बारिश चाहिए। लंबे समय तक बारिश न होने पर मिट्टी की नमी घट सकती है और फसल पर दबाव बढ़ सकता है। बहुत अधिक बारिश कम समय में हो जाए तो खेतों में जलभराव, मिट्टी का कटाव और फसल को नुकसान जैसी स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। किसान इसलिए बादलों को केवल देखता नहीं , उनका मिजाज पढ़ता है। उसे ऐसी बारिश चाहिए जो खेत को सींचे, फसल को सँवारे और मिट्टी की ताकत बनाए रखे। किसान के लिए आदर्श सावन वह है जिसमें बारिश उम्मीद के साथ आए और संतुलन के साथ ठहरे।

सावन खेत के साथ जल-संसाधन भी भरता है

मानसूनी बारिश का महत्व खेत की सीमा से बहुत आगे तक जाता है। तालाबों में पानी भरता है, जलाशयों का स्तर बढ़ता है, नदियों और छोटी जलधाराओं में प्रवाह आता है। वर्षा का एक हिस्सा जमीन के भीतर जाकर भूजल पुनर्भरण में योगदान देता है। इसका लाभ खरीफ फसल को ही नहीं मिलता। आने वाले महीनों में यही जल सिंचाई, पशुपालन और ग्रामीण जीवन की दूसरी जरूरतों का आधार बन सकता है। इसलिए सावन की बारिश वर्तमान फसल के साथ भविष्य की जल-सुरक्षा भी तैयार करती है।

बारिश में छिपा होता है पूरे परिवार का भविष्य

किसान के लिए फसल सिर्फ खेत में खड़ी हरियाली नहीं है। उसके पीछे परिवार की अनेक जरूरतें जुड़ी होती हैं। बच्चों की पढ़ाई, घर का खर्च, कृषि की अगली तैयारी, कर्ज की अदायगी और भविष्य की छोटी-बड़ी योजनाएँ इन सबकी उम्मीद खेत से होती है। खेती में खर्च पहले होता है और आमदनी फसल तैयार होने के बाद आती है। इसलिए मौसम की अनिश्चितता किसान के आर्थिक जोखिम को बढ़ा सकती है। सावन में गिरती बारिश उसके लिए एक तरह से उस जोखिम के बीच भरोसे की दस्तक होती है।

बदलते मौसम ने बढ़ाई सावन की चिंता

जलवायु परिवर्तन और मौसम की बदलती प्रवृत्तियों ने मानसून की अनिश्चितता को कृषि के लिए गंभीर विषय बना दिया है। देश का औसत मानसून सामान्य दिखाई दे सकता है, फिर भी अलग-अलग क्षेत्रों में बारिश की स्थिति काफी अलग रह सकती है। 2024 में देशभर में दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा दीर्घकालिक औसत की 108 प्रतिशत रही, जबकि पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भारत में यह 86 प्रतिशत रही। यह अंतर बताता है कि राष्ट्रीय औसत किसान के खेत की वास्तविक स्थिति की पूरी तस्वीर नहीं देता। इस बदलते मौसम के दौर में वर्षा जल-संचयन, खेतों में उचित जल निकासी, फसल विविधीकरण, मौसम आधारित कृषि सलाह और वैज्ञानिक खेती की भूमिका बढ़ गई है। मौसम का पूर्वानुमान किसान को जोखिम समझने और समय पर निर्णय लेने में मदद करता है।

तकनीक आई, आसमान से रिश्ता कायम रहा

आज किसान के हाथ में मोबाइल है। मौसम की जानकारी पहले से अधिक आसानी से उपलब्ध है। कृषि-मौसम सलाह, वर्षा पूर्वानुमान और आधुनिक कृषि तकनीक खेती के निर्णयों को अधिक वैज्ञानिक बना रहे हैं। फिर भी खेत के किनारे खड़ा किसान बादलों को देखकर मौसम का अंदाजा लगाने की अपनी पुरानी आदत नहीं छोड़ पाया है। क्योंकि तकनीक बारिश का पूर्वानुमान दे सकती है, बारिश की प्रतीक्षा का भाव केवल किसान ही समझ सकता है। किसान के लिए बादल किसी मौसम रिपोर्ट का हिस्सा नहीं, उस फसल की अगली सांस हैं जो खेत में खड़ी है।

सावन की असली कहानी

हम शहरों में बारिश को खिड़की से देखते हैं। किसान उसे मिट्टी पर महसूस करता है। हमारे लिए बारिश मौसम है, किसान के लिए रोजगार, अन्न, आय और भविष्य की उम्मीद है। सावन की हर बूँद जब खेत में गिरती है, तो उसके साथ किसान का एक सपना भी धरती में उतरता है। बीज अंकुर बनता है, अंकुर पौधा बनता है और पौधा धीरे-धीरे फसल का रूप लेता है। इस पूरी यात्रा में किसान का पसीना और प्रकृति की कृपा साथ-साथ चलती है। सावन इसलिए सिर्फ बादलों का मौसम नहीं है। यह उस किसान की उम्मीद का मौसम है, जिसकी मेहनत धरती पर होती है और जिसकी नजरें आसमान पर टिकी रहती हैं। बारिश की हर बूँद में उसे अन्न की संभावना दिखाई देती है, हरियाली में परिवार का भविष्य और लहलहाती फसल में अपनी मेहनत की सबसे सुंदर तस्वीर।

●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ
सहकारेण
कल्याणम्
दि कल्याण जनता
सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने
तारण
कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया
शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

स्वर्णिम भविष्य की आशा

शिक्षा

डॉ. तारकेश्वर नाथ मिश्र

देशभर में मुफ्त कोचिंग सेंटर खोलने की घोषणा युवा सशक्तीकरण, सामाजिक न्याय और समान अवसर को व्यापक दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

भारत आज विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है और इसकी युवा जनसंख्या देश की सबसे बड़ी शक्ति है। करोड़ों युवा उच्च शिक्षा, रोजगार और प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से अपने भविष्य को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, लेकिन आर्थिक संसाधनों की असमानता के कारण अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुरूप अवसर प्राप्त नहीं कर पाते। महंगी कोचिंग व्यवस्था, अध्ययन सामग्री का खर्च, शहरों में रहने और आने-जाने की लागत तथा उचित मार्गदर्शन का अभाव विशेष रूप से ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए बड़ी चुनौती है। ऐसे वातावरण में देशभर में मुफ्त कोचिंग सेंटर खोलने की प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में अवसरों की समानता को मजबूत करना और प्रतिभाशाली युवाओं को आगे बढ़ने के लिए आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराना है।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आज केवल ज्ञान और परिश्रम का विषय नहीं रह गई है, बल्कि सही रणनीति, गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, नियमित अभ्यास, टेस्ट सीरीज और अनुभवी मार्गदर्शन भी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बड़े शहरों में अनेक प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान उपलब्ध हैं, लेकिन उनकी फीस सामान्य परिवारों के लिए बहुत अधिक होती है। फलस्वरूप आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थी प्रतिभा और मेहनत होने के बावजूद पीछे रह जाते हैं। मुफ्त कोचिंग सेंटर इस आर्थिक बाधा को कम करके विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करने का माध्यम बन सकते हैं।

इस पहल का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी बनाना है। किसी विद्यार्थी की सफलता केवल उसके परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। यदि किसी गरीब परिवार का विद्यार्थी प्रतिभाशाली है और उसमें देश की प्रतिष्ठित सेवाओं में जाने की क्षमता है, तो आर्थिक अभाव उसके सपनों के रास्ते में बाधा नहीं बनना चाहिए। मुफ्त कोचिंग के माध्यम से ऐसे विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आवश्यक शैक्षणिक सहायता उपलब्ध कराई जा सकती है। यह व्यवस्था सामाजिक न्याय और समान अवसर की भावना को मजबूत करेगी।

इस योजना का विशेष लाभ ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को मिल सकता है। आज भी अनेक गांवों और छोटे कस्बों में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेषज्ञ मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है। विद्यार्थियों को तैयारी के लिए भोपाल,

इंदौर, दिल्ली, प्रयागराज, जयपुर जैसे बड़े शहरों की ओर जाना पड़ता है, जिससे परिवार पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता है। यदि जिला, तहसील और आवश्यकता के अनुसार ब्लॉक स्तर तक मुफ्त कोचिंग की सुविधा विकसित की जाती है, तो विद्यार्थी अपने घर के निकट रहकर गुणवत्तापूर्ण तैयारी कर सकेंगे। इससे ग्रामीण प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर आगे आने का अवसर मिलेगा।

जनजातीय और दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए भी ऐसी पहल अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। मध्यप्रदेश जैसे राज्य में अनेक जनजातीय बहुल क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से दूरस्थ हैं। वहां के युवाओं में प्रतिभा और परिश्रम की क्षमता होने के बावजूद गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंच सीमित हो सकती है। यदि इन क्षेत्रों में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप मुफ्त कोचिंग सेंटर स्थापित किए जाएं, तो जनजातीय युवाओं की उच्च शिक्षा तथा सरकारी सेवाओं में भागीदारी बढ़ाई जा सकती है।

महिला विद्यार्थियों को भी इसका महत्वपूर्ण लाभ मिल सकता है। अनेक छात्राएं आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों के कारण दूसरे शहरों में जाकर कोचिंग नहीं ले पातीं। उनके आसपास सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण कोचिंग उपलब्ध होने से वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी अधिक सहजता से कर सकेंगी। इससे महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और प्रशासनिक भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा तथा आत्मनिर्भरता की दिशा में उनके कदम मजबूत होंगे। मुफ्त कोचिंग सेंटरों का उद्देश्य केवल प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता दिलाना नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी होना चाहिए। विषय विशेषज्ञों द्वारा अध्यापन के साथ समय प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास, संचार कौशल, तार्किक चिंतन, समस्या समाधान, साक्षात्कार की तैयारी और मानसिक दृढ़ता जैसे क्षेत्रों पर भी प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे परीक्षा के साथ-साथ जीवन की अन्य चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार होंगे। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 **Email : hindivivekvargani@gmail.com**

प्रवीण सिन्हा

वैश्विक स्तर पर मची खलबली और ऊहापोह की स्थिति में भी विश्व खेल जगत अपनी तय राह और दिशा पर नित अग्रसर है। खेल जगत ने दिखाया है - निरंतर चलते रहने, न रुकने या थकने और न हारने का नाम है खेल।

शिखर की ओर बढ़ते कदम

भारतीय खेल जगत संभवतः कुछ तेज गति से आगे बढ़ रहा है। उदाहरण के तौर पर, बदलते भारत में भारतीय खेल जगत नए जोश व उत्साह के साथ आगे बढ़ने को दृढ़ संकल्प नजर आ रहा है। दूसरा, पिछले दिनों ग्लासगो राष्ट्रकुल खेलों में शानदार प्रदर्शन कर लौटे भारतीय दल के सामने अहमदाबाद में होने वाले अगले 2030 राष्ट्रकुल खेलों में देश का नाम रोशन करने का कठिन लक्ष्य है।

तमाम खेल हैं लुभाने को

इस क्रम में भारतीय क्रिकेट देश का नाम रोशन करने में सबसे आगे रहा है। वैभव सूर्यवंशी, अभिषेक शर्मा, देवदत्त पड्डीकल और मानव सुथार जैसे कई नाम हैं जो विश्व क्रिकेट जगत में धूम मचा रहे हैं। देश में खेल संस्कृति को विकसित करने में क्रिकेट की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और खेलप्रेमियों के बीच सबसे प्रचलित खेल के रूप में क्रिकेट का ही नाम लिया जाता रहा है। लेकिन इस बीच, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, निशानेबाजी, मुक्केबाजी, भारोत्तोलन, तीरंदाजी, जूडो और अपनी समृद्ध परंपरा को कायम करने की ओर अग्रसर हॉकी में भारत जिस गति से प्रगति कर रहा है, वह एक संतोषजनक, एक सकारात्मक परिणाम के तौर पर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए पिछले दिनों 2026 ग्लासगो राष्ट्रकुल खेलों

में शानदार प्रदर्शन, विश्व कप हॉकी में महिला व पुरुष दोनों टीमों का विश्वास के साथ आगे बढ़ना और देश की राजधानी दिल्ली में चल रहे बीडब्ल्यूएफ बैडमिंटन विश्व कप में युवा खिलाड़ियों के हैरतअंगेज प्रदर्शन विश्व खेल जगत में भारत के बढ़ते कद को बखूबी दर्शाता है। बैडमिंटन की सुपर पावर चीन, मलेशिया, इंडोनेशिया या यूरोपीय देशों के खिलाड़ी भारत के लक्ष्य सेन, सात्विक व चिराग शेट्टी की जोड़ी, किदाम्बी श्रीकांत, पीवी सिंधू और आयुष शेट्टी जैसे खिलाड़ियों के सामने अब सहमे-सहमे से कोर्ट पर उतरते हैं। एक समय था जब विपक्षी खिलाड़ी बैडमिंटन कोर्ट पर भारतीय खिलाड़ियों को देखते ही मान लेते थे कि उन्हें आसानी से जीत मिल जाएगी। लेकिन अब कहानी पूरी तरह से बदल गयी है।

पौराणिक खेलों में भी अव्वल

यही नहीं, भारत के पौराणिक खेल जैसे तीरंदाजी, कुश्ती और कबड्डी में भी भारतीय खिलाड़ी पूरा दमखम दिखाते हैं। भारतीय खेल की बदलती दशा व दिशा का ही नतीजा है कि अब खेलप्रेमी मानने लगे हैं कि देश एक खेल संस्कृतियुक्त राष्ट्र बन रहा है। यही नहीं, पहले जहां फुटबॉल, हॉकी और क्रिकेट मैचों के दौरान स्टेडियमों या टीवी चैनलों पर दर्शकों की भरमार लगी रहती थी, अब अन्य खेलों के प्रति भी दर्शकों का रुझान उतना ही गहरा है। अब बैडमिंटन, कबड्डी, कुश्ती और भारोत्तोलन जैसे खेलों में भी देश को स्टार खिलाड़ी मिलने लगे हैं। इसे अतिशयोक्ति न मानें तो कई बार ऐसा भी मौका आया है जब एक ओर क्रिकेट का मैच चल रहा है और दूसरी ओर, नीरज चोपड़ा ओलंपिक या डायमंड लीग जैसे महामंच पर जेवलिन थ्रो कर रहे हैं, तो ज्यादातर खेलप्रेमी एथलेटिक्स के मुकाबले देखने के लिए टीवी से चिपके नजर आते हैं।

राष्ट्रकुल खेलों से बढ़ा जलवा

2026 ग्लासगो राष्ट्रकुल खेलों में भारतीय दल का यादगार प्रदर्शन रहा। इस दौरान विश्व मुक्केबाजी में अब भारत एक महाशक्ति नहीं, बल्कि सम्मान के साथ लिया जाने वाला नाम बन गया है। ग्लासगो में भारतीय मुक्केबाजों ने 7 स्वर्ण व 3 रजत सहित कुल 10 पदक जीते, जो राष्ट्रकुल खेलों के 94 वर्षों के इतिहास में किसी एक संस्करण में किसी भी देश द्वारा जीते गए सर्वाधिक पदकों का रिकॉर्ड है। भारत के 10 मुक्केबाजों ने फाइनल में जगह बनायी और उनमें से 7 को स्वर्णिम पंच जड़ते देख भारतीय खेलप्रेमियों का सीना गर्व से चौड़ा हो गया। और, भारतीय नारी शक्ति की प्रहार क्षमता देखते ही बन रही थी जब जैसमिन लंबोरिया व साक्षी चौधरी 5 महिला मुक्केबाजों ने स्वर्ण पदक जीते। दमदार पंच के दम पर भारतीय महिला मुक्केबाजी टीम विश्व की नंबर एक टीम बन गयी है जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी।

एथलीटों की लंबी छलांग

कमोबेश इसी तरह भारतीय एथलीटों ने भी ग्लासगो में शानदार प्रदर्शन करते हुए देश का नाम रोशन किया। स्टार खिलाड़ी नीरज चोपड़ा पहले से ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी धमक साबित कर चुके हैं, लेकिन जेवलिन थ्रो में ही नीरज के साथ यशवीर सिंह का विजेता मंच पर खड़ा होना देश का मान काफी बढ़ा गया। शारीरिक दमखम के दम पर पारंपरिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का कद निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसका उदाहरण कुश्ती, कबड्डी और मुक्केबाजी में खूब देखने को मिला, अब भाला फेंक, गोला फेंक, या तारगोला फेंक स्पर्धाओं में भी भारतीय खिलाड़ी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे हैं। एथलेटिक्स की लंबी दूरी की दौड़ या डेकाथलॉन में भी भारतीय धावकों ने धमाकेदार प्रदर्शन किया। गुलवीर सिंह ने ग्लास्गो में वह कर दिखाया जो आज तक कोई भारतीय ट्रैक एथलीट नहीं कर पाया था। वह एक ही राष्ट्रमंडल खेलों के संस्करण में दो व्यक्तिगत मेडल जीतने वाले भारत के पहले ट्रैक एंड फील्ड एथलीट बने। पुरुषों की 10 हजार मीटर दौड़ में उन्होंने रजत और 5 हजार मीटर दौड़ में असाधारण स्टैमिना दिखाते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। इसी तरह, तेजस्विन शंकर डेकाथलॉन (10 स्पर्धाएं) में पदक जीतने वाले पहले भारतीय बने। उन्होंने दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर कांस्य पदक जीत एशियाई देशों के बीच अपनी पहचान कायम की।

भारोत्तोलन का बढ़ता ग्राफ

इसी तरह, भारतीय भारोत्तोलकों ने विश्व स्तर पर कई बार देश का नाम रोशन किया है। वर्ष 2000 सिडनी ओलंपिक में कांस्य पदक जीत इतिहास रचने वाली कर्णम मल्लेश्वरी और कुंजारानी देवी ने भारत में दो-तीन दशक पहले भारोत्तोलन को एक नयी पहचान दिलायी थी जिसे 2020 टोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता मीराबाई चानू ने अब तक कायम रखा है। ग्लासगो सहित राष्ट्रकुल खेलों में लगातार तीन बार स्वर्ण पदक जीत इतिहास रचने वाली मीराबाई चानू ने एक बातचीत के दौरान बताया कि भारतीय भारोत्तोलकों को अब वैज्ञानिक तौर-तरीके से प्रशिक्षण दिलाया जाता है और बेहतर सुविधाओं के बीच उन्हें अभ्यास कराया जाता है जिसका फायदा साफ तौर पर दिख रहा है। ग्लासगो में भारोत्तोलन में मीराबाई के एक स्वर्ण सहित 6 रजत और एक कांस्य पदक जीतना भारत में खेल की बदलती बयार का उदाहरण है।

●●●

राजीव रोहित

राष्ट्रीय खेल दिवस का उद्देश्य केवल खेल नहीं होते, वे प्रोत्साहन और एकता की भावना को समाहित करते हैं। स्थानीय खेल आयोजनों से शुरुआत करना किसी खिलाड़ी की जीवन-यात्रा का अभिन्न अंग होता है।

खेलों से एकता का संदेश

राष्ट्रीय खेल दिवस हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी स्वर्गीय मेजर ध्यान चंद की जयंती पर मनाया जाता है। यह दिन उनके अदम्य साहस और खेल जगत में उनके असाधारण योगदान को सम्मानित करने के लिए समर्पित माना जाता है। इस खेल दिवस का मुख्य उद्देश्य खेलों के महत्व को समझना भी है। इसके साथ ही यह संदेश भी स्थापित करना है कि खेल केवल खेल-कूद नहीं हैं, वे दिलों, समुदायों और देशों को जोड़ते हैं-वे बाधाओं को पार करते हैं और एक साझा जुनून के माध्यम से लोगों को एक सूत्र में जुट करते हैं। 29 अगस्त, 1905 को जन्मे मेजर ध्यान चंद एक असाधारण हॉकी खिलाड़ी थे, जो हॉकी स्टिक सम्भालने और गेंद पर नियंत्रण रखने में दक्ष थे। उनकी सटीकता और कुशलता ने उन्हें एक महान खिलाड़ी का दर्जा दिलाया। उनके मार्गदर्शन में भारत ने हॉकी में लगातार तीन ओलम्पिक स्वर्ण पदक जीते और खेल इतिहास में उनका नाम दर्ज हो गया। मेजर ध्यानचंद ने अपनी उपलब्धियों के माध्यम से एक खिलाड़ी के अटूट समर्पण की एक ऐसी विरासत छोड़ी है जो मिसाल कायम करती है। यह महानता की चाह रखने वाले महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के लिए एक मार्गदर्शक है और यही कारण है कि राष्ट्रीय खेल दिवस प्रत्येक साल उनके जन्मदिन पर मनाया जाता है। उन्होंने एक एथलीट के रूप में अपनी पहचान से कहीं बढ़कर सफलता प्राप्त किया है। यह महज कैलेंडर पर अंकित एक तारीख नहीं है, इसका गहरा और शाश्वत महत्व है। यह एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है जो खिलाड़ियों को, जो अधिकतर गुमनाम नायक होते हैं, सार्वजनिक पहचान की सुर्खियों में लाता है।

भारत में पहला राष्ट्रीय खेल दिवस वर्ष 2012 में मनाया गया था। आज की निरंतर विकसित होती दुनिया में, यह इस बात का एक अचूक अनुस्मारक बना हुआ है कि पदकों और ट्राफियों के आकर्षण के पीछे दृढ़ संकल्प, लगन और उत्कृष्टता की अटूट खोज से बुना हुआ एक ताना-बाना छिपा है।

आज देश भर के खिलाड़ियों को उनके अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन करने पर भरपूर सम्मान व सम्मानजनक राशि भी प्राप्त होती है। बेहतर प्रदर्शनों का सिलसिला अगर ओलम्पिक को छोड़ दिया जाए तो भी अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारतीय खिलाड़ियों ने विरोधियों की तुलना में विश्व स्तर पर बेहतर प्रदर्शन किया है। हमारे खिलाड़ी केवल क्रिकेट ही नहीं बल्कि अन्य खेलों के हर इंडोर-आउटडोर खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने लगे हैं। परिणाम यह है कि स्टार खिलाड़ी अब केवल क्रिकेटर नहीं हैं बल्कि नीरज चोपड़ा (भाला फेंक), मनु भाकर (निशानेबाजी),पी वी सिंधु और सायना नेहवाल (बैडमिंटन),मैरी कॉम (मुक्केबाजी) और हॉकी के स्टार खिलाड़ियों की एक फौज है जो विविध प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए देश

का नाम रोशन करते रहते हैं। क्रिकेट से बात शुरु की जाए तो पुरुष खिलाड़ियों ने विश्व कप, चैम्पियस ट्रॉफी आदि जीते हैं तो महिला खिलाड़िगण भी कम नहीं रही हैं। उन्होंने कई अवसरों पर अपना दमखम दिखाते हुए बड़ी क्रिकेट प्रतियोगितायें जीती हैं। ताजातरीन उदाहरण भारत और इंग्लैंड के बीच क्रिकेट का काशी कहे जानेवाले लार्ड्स में खेले गए टेस्ट मैच में उन्होंने विरोधियों को हर विभाग में मात देते हुए सर्वश्रेष्ठ जीत प्राप्त किया और क्रिकेट जगत में भारतीय क्रिकेट का परचम लहराया है। अभी हाल ही में भारतीय खिलाड़ियों ने राष्ट्रमंडल खेलों में 39 पदक (13 स्वर्ण,17 रजत और 9 कांस्य) जीतकर चौथा स्थान प्राप्त किया है। खिलाड़ियों का उनके गृह प्रदेश में जिस प्रकार भव्य स्वागत हुआ वह न्यूज चैनलों के माध्यम से देखने लायक और प्रेरणादायक था।बैडमिंटन, निशानेबाजी, तीरंदाजी, शतरंज और पैरा स्पोर्ट्स के खिलाड़ियों की उपलब्धियां देश भर के युवाओं को प्रेरित करने के लिए पर्याप्त हैं। हमें यह विश्वास करना चाहिए कि आनेवाले एशियाई खेलों में भी खिलाड़ियों का प्रदर्शन उच्च कोटि का होगा।

राष्ट्रीय खेल दिवस के दिन ऐसे प्रतिभाशाली और विजयी खिलाड़ियों का सार्वजनिक सम्मान किया जाना चाहिए और नगर के सभी युवाओं को इस समारोह में भागीदारी करनी चाहिए। राष्ट्रीय खेल दिवस के बारे में जानकारी फैलाना, खेल आयोजनों में भाग लेना और अपने स्थानीय खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करना बहुत अच्छा है, लेकिन उभरते हुए खिलाड़ियों, खेल संगठनों और विभिन्न खेल सम्बंधी पहलों को समर्थन देने के लिए क्राउडफंडिंग एक शक्तिशाली माध्यम है। यह एक सामूहिक प्रयास है जहां व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभावान खिलाड़ियों के लिए उपकरण, प्रशिक्षण और टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए अपने संसाधनों को एकजुट करते हैं। इसके अलावा क्रिकेट के अलावा अनेक खेलों (फुटबॉल, कबड्डी, हॉकी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, वॉलीबॉल) पेशेवर लीग शुरु किए गए हैं। इनमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी हिस्सा लेते हैं जो भारतीय खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धा का पाठ पढ़ाते हैं। जिससे भारतीय खिलाड़ियों को पेशेवर ढंग से अपना खेल दिखाने और निखारने की प्रेरणा मिलती है। राष्ट्रीय खेल दिवस पर व्यक्तियों, विशेषकर ऊर्जावान युवाओं को, निष्क्रिय जीवनशैली छोड़ने और बाहरी गतिविधियों और खेलों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भव्यता और जमीनी स्तर का उत्साह एक साथ मिलकर राष्ट्रीय खेल दिवस पर पूरे देश में एक संक्रामक उत्साह पैदा करते हैं।

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

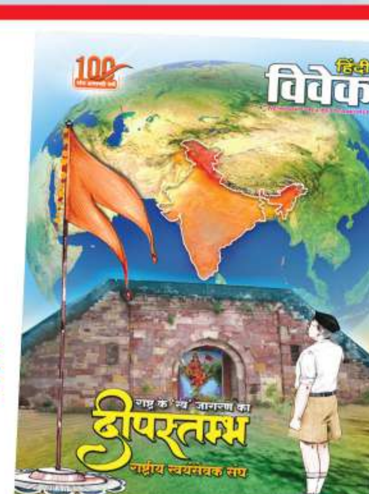

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

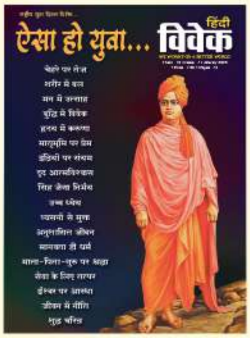

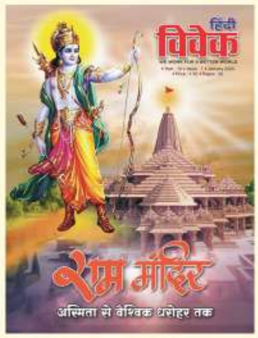

हिंदी
विवेक
" We Work For A Better World"

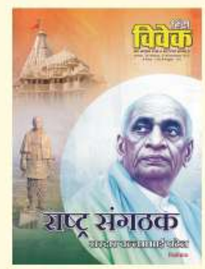

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

अंतरिक्ष विज्ञान को सशक्त बनाते लघु उद्योग

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

> अंतरिक्ष विज्ञान की ओर बढ़ता भारत वास्तव में उन असंख्य अदृश्य हाथों और मस्तिष्कों का भारत है, जो प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, विनिर्माण इकाइयों और छोटे-बड़े उद्योगों में निरंतर नवाचार करते हुए भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस भारत की वैज्ञानिक प्रतिभा, तकनीकी प्रगति और दृढ़ संकल्प का प्रतीक है, जिसे प्रतिवर्ष 23 अगस्त को मनाया जाता है। यह दिवस चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत की पहली सफल सॉफ्ट लैंडिंग की स्मृति को समर्पित है।

60 के दशक में सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बीच भारत की अंतरिक्ष यात्रा का शुभारम्भ हुआ था। डॉ. विक्रम साराभाई की दूरदर्शी परिकल्पना ने अंतरिक्ष विज्ञान को जनकल्याण और राष्ट्रीय विकास का सशक्त माध्यम बना दिया। चंद्रयान-3, आदित्य-एल1 और मंगलयान जैसे सफल अभियानों तथा गगनयान व वीनस ऑर्बिटर जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं ने अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की बढ़ती वैश्विक क्षमता को सिद्ध किया है।

कम लागत, उच्च गुणवत्ता, स्वदेशी तकनीक और नवाचार के बल पर भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी विशिष्ट एवं सम्मानजनक पहचान स्थापित की है।

कभी उन्नत प्रौद्योगिकियों के लिए विदेशों पर निर्भर भारत आज पीएसएलवी, जीएसएलवी, एलवीएम-3, एसएसएलवी और आरएलवी जैसी स्वदेशी प्रक्षेपण प्रणालियों के बल पर अंतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन चुका है। यह आत्मविश्वास कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, रक्षा प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग और उन्नत विनिर्माण जैसे रणनीतिक क्षेत्रों को भी नई गति प्रदान कर रहा है। उपग्रह आधारित संचार, निगरानी और नेविगेशन प्रणालियां आज भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा की मजबूत

आधारशिला बन गई हैं। सीमा एवं समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-नियंत्रण, आपदा प्रबंधन और अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में नॉविक जैसी स्वदेशी अंतरिक्ष सेवाएं प्रभावी भूमिका निभा रही हैं।

संचार उपग्रहों ने रक्षा एवं सुरक्षा तंत्र को सुरक्षित और त्वरित सम्पर्क प्रदान कर अधिक प्रभावी बनाया है, वहीं अंतरिक्ष तकनीक कृषि, जल संसाधन और भूमि प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण सहयोग दे रही है। मौसम पूर्वानुमान और आपदा चेतावनी प्रणालियों की सटीकता बढ़ाकर यह चक्रवात, बाढ़ और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं से जन-धन की सुरक्षा में अहम भूमिका निभा रही है। टेलीमेडिसिन और टेली-एजुकेशन जैसी पहलों ने दूरस्थ क्षेत्रों तक स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाएं पहुंचाकर विकास को अधिक समावेशी बनाया है। आज अंतरिक्ष विज्ञान प्रयोगशालाओं तक सीमित न रहकर आम नागरिक के जीवन, सुरक्षा, आजीविका, स्वास्थ्य और शिक्षा का अभिन्न अंग बन चुका है।

यहां एक विचारणीय तथ्य है कि क्या भारत की इन गौरवशाली अंतरिक्ष उपलब्धियों में केवल इसरो अथवा बड़े वैज्ञानिक संस्थानों का ही योगदान है। जी नहीं, निःसंदेह इनके साथ साथ देश के लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यम भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की वास्तविक आधारशिला बनकर उसकी उपलब्धियों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। जब कोई रॉकेट आकाश की ऊंचाइयों की ओर उड़ान भरता है, तब सामान्यतः लोगों का ध्यान प्रक्षेपण केंद्रों और वैज्ञानिकों की ओर जाता है, किंतु उस सफलता के पीछे अनगिनत उद्योगों का वर्षों का परिश्रम और तकनीकी दक्षता भी निहित होती है। रॉकेटों के निर्माण के लिए आवश्यक हल्की किंतु अत्यंत मजबूत धातु संरचनाएं, इंजन के उच्च-परिशुद्धता वाले कलपुर्जे, तापरोधी सामग्री, प्रणोदन एवं ईंधन प्रणालियों के घटक तथा प्रक्षेपण तंत्र से जुड़े अत्याधुनिक सेंसर, प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक मॉड्यूल, कनेक्टर, केबल, वाल्व, नियंत्रण एवं मार्गदर्शन प्रणालियों जैसे कई उपकरण बड़ी संख्या में देशभर में फैले अनेक छोटे और मध्यम उद्योगों द्वारा निर्मित किए जाते हैं, जिनके बिना किसी भी अंतरिक्ष अभियान की कल्पना सम्भव नहीं है।

अंतरिक्षविज्ञान में प्रगति ने भारत के एमएसएमई क्षेत्र को भी वैश्विक स्तर की तकनीकी क्षमता विकसित करने का अवसर दिया है। आज अंतरिक्ष विज्ञान का दायरा पारम्परिक हार्डवेयर निर्माण से कहीं आगे बढ़ चुका है। यह अब उन्नत सॉफ्टवेयर, डेटा विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल नवाचारों से संचालित एक व्यापक तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। भारत के अनेक स्टार्टअप तथा लघु एवं मध्यम उद्यम नेविगेशन सॉफ्टवेयर, डेटा प्रोसेसिंग प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित नियंत्रण प्रणालियों, डिजिटल ट्विन तथा सिमुलेशन तकनीकों के विकास के साथ ही अंतरिक्ष अभियानों को अधिक सटीक, सुरक्षित और दक्ष बनाने में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा लागू की गई दूरदर्शी भारतीय अंतरिक्ष नीति-2023 ने अंतरिक्ष गतिविधियों में निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए अभूतपूर्व अवसरों के द्वार खोल दिए हैं। भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र यानी इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइजेशन सेंटर की स्थापना, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से सम्बंधित उदार नीतियां, न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड की बढ़ती व्यावसायिक भूमिका तथा सार्वजनिक-निजी साझेदारी के अभिनव मॉडल भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को नई दिशा और गति प्रदान कर रहे हैं।

अनेक देशों के उपग्रह प्रक्षेपण और संयुक्त मिशनों के माध्यम से भारत अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण एवं उत्तरदायी उपयोग हेतु एक विश्वसनीय वैश्विक साझेदार के रूप में स्थापित हुआ है।

हालांकि बजट, सामरिक प्राथमिकताओं, डेटा साझाकरण और विभिन्न अंतरिक्ष कार्यक्रमों की संरचनात्मक चुनौतियां व्यापक अंतरराष्ट्रीय सहयोग के मार्ग में अभी भी बाधक हैं।

वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अपनी भागीदारी बढ़ाने हेतु भारत ने उपग्रह निर्माण में 100% एफडीआई की अनुमति और प्रक्षेपण नियमों को सरल बनाया है। इन सुधारों से विदेशी निवेश को प्रोत्साहन मिला है तथा भारतीय अंतरिक्ष उद्योग के विकास को नई गति प्राप्त हुई है। सरकारी सुधारों का सर्वाधिक लाभ एमएसएमई और उभरते स्टार्टअप्स को मिला है, जिससे अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी कम्पनियों की भागीदारी तेजी से बढ़ी है। इसरो अब सरकारी संस्थान होने के साथ-साथ निजी उद्योगों के साथ साझेदारी को प्रोत्साहित कर अंतरिक्ष क्षेत्र के विस्तार को नई दिशा दे रहा है।

वहीं स्काईरूट एयरोस्पेस, अग्निकुल, पिक्सल, ध्रुव स्पेस, बेलाट्रिक्स एयरोस्पेस और दिगंतरा जैसी कम्पनियां भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में नवाचार एवं निजी भागीदारी को नई ऊंचाइयां दे रही हैं। लगभग 440 स्टार्टअप्स और कम्पनियों की सक्रिय उपस्थिति, बढ़ते निवेश तथा इन-स्पेस की अनुमतियों ने देश के अंतरिक्ष पारितंत्र को उल्लेखनीय रूप से सशक्त बनाया है।

●●●

संघव्रती प्रचारक बाबूराव देसाई

बाबूराव देसाई 1949 में प्रचारक बने और राम मंदिर आंदोलन तथा दक्षिण भारत में हिंदुत्व के प्रसार में सक्रिय रहे। 96 वर्ष की आयु में 22 जनवरी 2021 को बेंगलुरु में उनका देहावसान हुआ

विजय कुमार

संघ और फिर विश्व हिंदू परिषद में अंतिम सांस तक कार्यरत वरिष्ठ प्रचारक बाबूराव देसाई का जन्म 25 अगस्त, 1925 को गोवा में हुआ था। उनका पूरा नाम रघुनाथ नारायणराव प्रभु देसाई था। उनके पिता नारायणराव प्रभु देसाई फल बेचकर अपने परिवार का भरण पोषण करते थे।

बाबूराव शुरू से ही मेधावी होने के कारण स्वर्ण पदक एवं छात्रवृत्तियां पाते रहे। छात्र जीवन में वे स्वाधीनता आंदोलन में भी सक्रिय रहे। स्नातक परीक्षा में उन्होंने कला और अंग्रेजी में विशेष उपाधि प्राप्त की। इसके साथ वे कोंकणी, मराठी, हिंदी, कन्नड़, पुर्तगाली तथा फ्रेंच भाषा भी बोल लेते थे। उनका कार्यक्षेत्र मुख्यतः दक्षिण भारत रहा। अतः वे दक्षिण की अन्य भाषाएं भी समझ लेते थे। वे सादगी, संयम और प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति थे। मृदुभाषी बाबूराव 1942 में स्वयंसेवक तथा 1949 में प्रचारक बने। सर्वश्री यादवराव जोशी, जगन्नाथराव जोशी, भाउराव देवरस, बाबूराव देशपांडे तथा सदानंद काकड़े आदि वरिष्ठ प्रचारक उनके प्रेरणास्रोत थे। उनके प्रचारक जीवन की यात्रा वर्तमान कर्नाटक के करवाड़ नगर से शुरू हुई। इसके बाद वे धारवाड़, बेलगांव, गुलबर्गा, बेल्लारी आदि में जिला और विभाग प्रचारक रहे। 1971 में सरसंघचालक श्रीगुरुजी स्वास्थ्य लाभ के लिए 35 दिन तक कर्नाटक के सिरसी नगर में रहे। वहां उनकी देखभाल के लिए बाबूराव भी साथ रहे। वे दिन बाबूराव अपने जीवन के स्वर्णिम दिन मानते थे। कांग्रेस सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर 1948 तथा 1975 में प्रतिबंध लगाया। दोनों बार बाबूराव ने सहर्ष जेलयात्रा की। 1975 में तो उन्हें 'मीसा' में बंद किया गया। अतः वे प्रतिबंध की समाप्ति पर ही जेल से बाहर आए। 1980 के दशक में जब विश्व हिंदू परिषद के माध्यम से राम मंदिर आंदोलन का शंखनाद हुआ, तो अनेक वरिष्ठ प्रचारक इसमें लगाये गए। बाबूराव भी उनमें से एक थे। 1983 में वे कर्नाटक प्रांत के संगठन मंत्री बनाये गए। कुछ समय बाद उन्हें सम्पूर्ण दक्षिण भारत का काम दिया गया। उस दौरान हुए आंदोलनों में वहां से भी बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और कारसेवक अयोध्या आते थे।

दक्षिण भारत में संघ और विश्व हिंदू परिषद को प्रायः उत्तर भारत की उच्च जातियों तथा हिन्दीभाषियों की संस्था माना जाता था। अनेक राजनेता भी भाषण में यही बोलते थे। ऐसे में विनम्र स्वभाव के बाबूराव ने सभी मत, पंथ, जाति और बिरादरी के संतों से सम्पर्क किया। उन्होंने सभी मठ, आश्रम और मंदिरों के धर्माचार्यों से अच्छे सम्बंध बनाए। कई जगह उनका अपमान और उपेक्षा भी हुई, पर वे स्थितप्रज्ञ की तरह शांत रहते थे। इससे वातावरण बदला और हिंदुत्व और मंदिर आंदोलन की लहर चल पड़ी। बाबरी ढांचे के ध्वंस के बाद वि.हि.प. पर प्रतिबंध लगाया गया। उस समय बाबूराव के प्रयास से दक्षिण में भी इसका प्रबल विरोध हुआ। बाबूराव की संगठन क्षमता देखकर संगठन ने उन्हें विश्व हिंदू परिषद में केंद्रीय मंत्री की जिम्मेदारी दी। इस नाते उन्होंने मंदिर आंदोलन के साथ ही गोरक्षा, परावर्तन तथा एकल विद्यालय के अभियान में विशेष योगदान दिया। वे किसी भी समस्या का समाधान सरल उदाहरण देकर आसानी से कर देते थे। आयुवृद्धि के कारण उनका काम हल्का कर उन्हें केन्द्रीय प्रबंध समिति का सदस्य बनाया गया। इस नाते उनके अनुभव का लाभ सबको मिलता था। मंगलुरू में उनका नागरिक अभिनंदन भी किया गया था।

आईएफ की पहली महिला टॉप गन बनीं भावना कंठ

स्क्वाड्रन लीडर भावना कंठ ने भारतीय वायुसेना में इतिहास रच दिया है। वे आईएफ की पहली महिला फाइटर पायलट बन गईं, जिन्होंने फाइटर कॉम्बैट लीडर कोर्स पूरा कर 'टॉप गन' का दर्जा प्राप्त किया है। 'टॉप गन' का अर्थ है सबसे कुशल और अनुभवी फाइटर पायलट, जो जटिल हवाई युद्ध अभियानों का नेतृत्व कर सकें। बिहार के दरभंगा की रहने वाली भावना कंठ इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद 2016 में वायुसेना में शामिल हुईं। वे भारत की पहली महिला फाइटर पायलट्स में शामिल हैं और 2019 में दिन के समय फाइटर कॉम्बैट मिशन के लिए भी चुनी गई थीं। भावना की यह यात्रा बिहार से आसमान तक की नई ऊंचाइयों की प्रेरणादायक मिसाल है।

कैनवास पर रामायण की 51 कथाएं, वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल

क्या प्लास्टिक कचरा भी किसी गांव की पहचान बदल सकता है? उत्तर प्रदेश के हाथरस का राजपुर इसका जवाब है। प्रियंका तिवारी की पहल से यह गांव प्लास्टिक मुक्त बनने की ओर बढ़ा। यहां 'कूड़ा लाओ, पैसे पाओ' अभियान शुरू हुआ, प्लास्टिक बैंक बनाए गए और सिंगल-यूज प्लास्टिक का प्रयोग सड़कों के निर्माण में किया जाने लगा। आज राजपुर साफ-सुथरे वातावरण और बेहतर कचरा प्रबंधन की मिसाल बन चुका है।

भारत में तैयार हुई प्रज्ञा

ऊर्जा की दुनिया में भारत ने एक और ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की है! बेंगलुरु के एक डीप-टेक स्टार्टअप प्रनोस फ्यूजन ने 'प्रज्ञा' नाम की स्वदेशी न्यूक्लियर फ्यूजन टोकामेक रिसर्च मशीन तैयार की है। यह वही तकनीक है जिससे सूरज अपनी असीमित ऊर्जा बनाता है। इस स्वदेशी मशीन के ज़रिए भारत अब जमीन पर सूरज जैसी प्रक्रिया से 100% प्रदूषण-मुक्त और असीमित बिजली बनाने की दिशा में शोध कर रहा है। आने वाले समय में यह तकनीक देश को कोयले और पेट्रोल जैसी निर्भरता से मुक्ति दिलाने में बेहद सहायक साबित हो सकती है।

राष्ट्र, समाज और भविष्य की चुनौतियों पर तीन दिनों तक व्यापक चिंतन-मंथन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित विभिन्न संगठनों की तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वय बैठक आज विशाखापट्टणम के समीप विज्ञान विहार आवासीय विद्यालय परिसर, गुडिलोवा में सम्पन्न हुई।

समाज और राष्ट्र के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत संघ प्रेरित संगठनों के प्रमुख पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बैठक में भाग लिया। बैठक के लिए कुल 326 प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था, जिनमें विभिन्न संगठनों का महिला नेतृत्व भी शामिल रहा। 49 महिला प्रतिनिधियों ने तीन दिवसीय बैठक में सहभागिता की।

बैठक में परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत तथा माननीय सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी की विशेष उपस्थिति रही। इसके साथ ही संघ प्रेरित विभिन्न संगठनों के राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं नेतृत्व ने बैठक में भाग लिया।

तीन दिनों के दौरान देश और समाज की वर्तमान परिस्थितियों, विभिन्न संगठनों द्वारा किए जा रहे कार्यों, उनके अनुभवों, भविष्य की चुनौतियों तथा आगामी कार्ययोजना पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ।

बैठक के सम्बंध में पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह सी.आर. मुकुंद जी ने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं के समय समाज आधारित सेवा और पुनर्वास कार्यों की समीक्षा की गई। असम में आई भीषण बाढ़ के दौरान राष्ट्रीय सेवा भारती, भारतीय किसान संघ, नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन (छ्चज), आरोग्य भारती सहित विभिन्न संगठनों और कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए राहत एवं पुनर्वास कार्यों की जानकारी साझा की गई।

संत रविदास जी के 650वीं जयंती के संदर्भ में उनके संदेश के आधार पर सामाजिक समरसता एवं सामाजिक सौहार्द के लिए देशभर में किए गए कार्यक्रमों और समाज से मिले सकारात्मक प्रतिसाद की समीक्षा की गई। इस दिशा में आगे भी कार्य को निरंतर बढ़ाने पर विचार हुआ।

उन्होंने कहा कि बैठक में जनसांख्यिकीय परिवर्तन एवं असंतुलन पर भी गंभीर चर्चा हुई। विश्व के अनेक देशों में वृद्ध होती जनसंख्या तथा घटती प्रजनन दर से उत्पन्न चुनौतियों के संदर्भ में भारत की परिस्थितियों पर विचार किया गया। विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में जनसंख्या के अनुपात में हो रहे परिवर्तनों तथा उनके सामाजिक प्रभावों पर चर्चा करते हुए समाज में संतुलन और सौहार्द बनाए रखने के उपायों पर विचार हुआ। उक्त प्रेस वार्ता में संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर जी, अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र ठाकुर जी, प्रदीप जोशी जी, सहित अन्य उपस्थित रहे।

टीजेएस्बी सहकारी बैंक लिमिटेड.
मल्टी-स्टेट शेड्यूल्ड बैंक
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
सपनों की कार से
कार की चाबी तक
अपने सपनों की कार घर लाएँ
टीजेएस्बी ऑटो फाइनेंस
लोन के साथ।
ब्याज दर
7.80%*
प्रतिवर्ष से शुरू
*अटी व नियम लागू
www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897203